परिवार में स्वतन्त्रतापूर्ण अनुशासन का प्रभाव : कुछ अभिभावक अपने बालकों को हर बात की अनुमति या अधिक छूट (Permissiveness) देते हैं। वे बच्चों के प्रति अधिक सहनशील होते हैं। वे बालकों के प्रारम्भिक अपरिपक्व विचारों और महत्त्वाकांक्षाओं को स्वीकार कर लेते हैं। अत्यधिक स्वतन्त्रता के कारण अभिभावकों एवं बालकों दोनों के व्यवहार पर प्रभाव पड़ता है। ऐसे अभिभावकों को अपने बालकों की व्यवस्था में अपेक्षाकृत अधिक शक्ति और धन व्यय करना पड़ता है। कभी-कभी कुसंगत में पड़ने के कारण बालक बुरी लत में पड़ कर अधिक अनिष्टकारी भी हो जाते हैं।

सर्वेक्षण के आधार पर अधिकांश रूप से यह पाया जाता है कि इन परिवार के बालक उद्यमी, सहयोगी, आत्मविश्वासी तथा सामाजिक परिस्थितियों में सुसमायो-

Scanned with CamScanner

जित होते हैं। इन परिवारों के सदस्यों में उत्तरदायित्व की भावना होती है। वे आपस में तथा समाज में सहयोग, स्नेह और धैर्य से काम लेते हैं। इनमें उचित विकास होने की सम्भावना अधिक होती है। ऐसे परिवारों में बहुमुखी प्रतिभा मिलती है।

'एडम्स' का अनुशासन-सम्बन्धी दृष्टिकोण : एडम्स ने अनुशासन सम्बन्धी अपनी विचारधारा को तीन वर्गों में बाँटा है—(1) अवदमनात्मक (Repressionistic), (2) प्रभावात्मक (Impressionistic) तथा (3) मुक्त्यात्मक (Emancipationistic)।

(1) अवदमनात्मक विचारधारा : इस विचारधारा में बच्चों को अनुशासित रखने के लिए दण्ड देना आवश्यक समझा गया। यह बच्चों के विकास, शिक्षा, आत्मसम्मान के लिए घातक थी। बच्चा भय के डर से अनुशासित रहता था। भय की परिस्थिति दूर हो जाने पर अधिक उद्दण्ड हो जाते थे, यदि पिता कठोर दण्ड देते हैं तो पिता की उपस्थिति में सभ्य बने रहेंगे उनके जाते ही शैतानी प्रारम्भ कर देंगे।

(2) प्रभावात्मक विचारधारा : इस व्यवस्था में बच्चों को अच्छे व्यवहार, आचरण एवं प्रेम द्वारा अच्छी आदतों का निर्माण किया जाता है। इस अभिभावक के व्यक्तित्व को प्रधानता निश्चित रूप से प्रदान की जाती है। बच्चे का व्यक्तित्व गौण स्थान रखता है।

(3) मुक्त्यात्मक विचारधारा : इसमें बालकों की स्वतन्त्रता में ही अनुशासन का विकास माना गया है, यही अनुशासन अधिकांशतः माननीय है।

Scanned with CamScanner

परिवार में अनुशासन रखने के विभिन्न उपाय

बच्चों को अनुशासन की शिक्षा देने के पहले माता-पिता तथा शिक्षक को स्वयं अनुशासित जीवन व्यतीत करना चाहिए। क्योंकि यह बच्चों का स्वभाव है कि वे बड़ों का अनुसरण करते हैं। माता-पिता तथा शिक्षकों का जीवन, श्रेष्ठ गुणों से परिपूर्ण और आदर्शवत् हो तो बच्चा स्वयं उन गुणों को ग्रहण करने के लिए उत्प्रेरित होता है। इस तरह अनुशासन की शिक्षा शुद्ध सैद्धान्तिक ही नहीं है अपितु व्यावहारिक भी है। "कथनी से करनी भली" के अनुसार, अनुशासित जीवन के लाभों से, बच्चे माता-पिता तथा शिक्षक का उदाहरण देखकर, उसकी ओर अपने-आप आकर्षित होते हैं।

अनुशासन सिखाने के लिए माता-पिता का व्यवहार भी उत्तम होना चाहिए। बच्चे के प्रति सम्मान भाव, सहानुभूति और सद्भावना उसे उन्हें देखने और समझने का मौका देती है। अन्यथा चिढ़ा हुआ और झुँझलाया बच्चा दूसरे के सद्गुणों को देखने-सुनने को ही नहीं तैयार होता है। बच्चे को सदैव स्वतन्त्र स्वक्रियाओं का अवसर देना चाहिए। निर्देश केवल अपना रखना चाहिए। यदि माता-पिता का निजी जीवन और व्यवहार बालक को प्रेरणा देने में असफल रहता है तो बच्चा भी अनुशासन के मार्ग से भटक जाता है। अतः बड़ों के द्वारा अपने जीवन को सामाजिक रूप से उपयोगी बनाने से बच्चा उन आदर्शों से प्रेरणा लेता है तथा श्रेष्ठ कार्य को अपने लिए भी चुन पाता है।

Scanned with CamScanner

अप्रत्यक्ष विधि से अनुशासन की शिक्षा देने से बच्चों में कृत्रिम या अस्थायी अनुशासन, प्रतिक्रिया, झुंझलाहट, कर्मपलायन, हठ तथा निराशा नहीं पैदा होने पाती है, तथा जीवन का उल्लास और उत्साह बना रहता है जिससे व्यक्तित्व निखर उठता है। दण्ड और क्रोध के बल पर अनुशासन सिखाया नहीं जा सकता है। दण्ड के भय से बच्चे बतायी गई बात को बिना समझे-बूझे अपने से चिपका लेते है परन्तु अवसर मिलते ही सब उसका साथ छोड़ देती हैं। अतः स्थायी और निश्चयात्मक प्रभाव डालने वाली विधि को अपनाना ही उत्तम है।

Scanned with CamScanner